Tuesday, 19 August, 1969

लोक-सभा वाद-विवाद

संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
4th

LOK SABHA DEBATES
आठवाँ सत्र
Eigth Session

Rack No ...57(1)...
Acc. No ...8.12.67...
PARLIAMENT LIBRARY

Preservation Unit
4-8-92
Fumigated
On 5.1.84
Parliament Library

सत्यमेव जयते

[खंड 32 में अंक 21 से 29 तक हैं
Vol. XXXII contains Nos. 21 to 29]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : एक रुपया

Price : One Rupee

50

Copy

Lok Sabha Debates

(Hindi)

Vol 32

Nos. 21 ~~to~~ 29

19th August - 30th August -

1969 36

P. L.

[यह लोक–सभा वाद–विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है ।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

विषय-सूची / CONTENTS

अंक--21-मंगलवार, 19 अगस्त, 1969/ 28 श्रावण, 1891 (शक)

No. 21, Tuesday, August 19, 1969/Sravana 28, 1891 (Saka)

विषय	SUBJECT	पृष्ठ/PAGES
	निधन सम्बन्धी उल्लेख (श्री हुमायून कबिर)	1—6
अध्यक्ष महोदय		1
श्रीमती इन्दिरा गांधी		2
श्री रंगा		2
श्री बलराज मधोक		2
श्री मनोहरन		3
श्री ही० ना० मुकर्जी		3
श्री रबि राय		3
श्री उमानाथ		4
श्री हेम बरुआ		4
श्री प्रकाशवीर शास्त्री		4
श्री अब्दुलगनी दार		5
श्री नि० चं० चटर्जी		5
श्री एम० मुहम्मद इस्माइल		5

लोक-सभा

LOK SABHA

मंगलवार, 19 अगस्त, 1969/ 28 श्रावण, 1891 (शक)

Tuesday, August 19, 1969 / Sravana 28, 1891 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई
The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[**अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए**
MR. SPEAKER *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख
OBITUARY REFERENCE

अध्यक्ष महोदय : मैं अत्यन्त दुःख के साथ सभा को यह सूचित करना चाहता हूँ कि कल सांयकाल को नई दिल्ली में श्री हुमायून कबिर की अकस्मात मृत्यु हो गई ।

श्री कबिर पश्चिम बंगाल राज्य के बसिरहाट निर्वाचन क्षेत्र से इस सभा के सदस्य चुने गए थे । इससे पहले वह वर्ष 1956 से 62 तक राज्य सभा के सदस्य और 1962 से 67 तक तीसरी लोक-सभा के सदस्य रहे थे। वह वर्ष 1957–58 में असैनिक उड्डयन मंत्री, वर्ष 1958 से 1963 तक वैज्ञानिक अनुसंधान तथा सांस्कृतिक-कार्य मंत्री और वर्ष 1963 से 66 तक पैट्रोलियम तथा रसायन मंत्री रहे थे । वह एक महान् शिक्षक तथा लेखक थे और शिक्षा के क्षेत्र में उनका बहुत ऊँचा स्थान था । वह एक सक्रिय सदस्य, अच्छे वाद-विवादकर्ता तथा बहुत नम्र स्वभाव के व्यक्ति थे ।

वह अन्तिम समय तक इस सभा में उपस्थित होते रहे। कोई व्यक्ति यह नहीं सोच सकता था कि एक महान् देशभक्त तथा विद्वान को हमसे इतना शीघ्र छीन लिया जायगा ।

हमें उनके निधन पर बहुत दुःख है और मुझे विश्वास है कि शोक-संतप्त परिवार को संवेदना-संदेश भेजने में सभा मेरा साथ देगी ।

प्रधान मन्त्री तथा सभा की नेता (श्रीमती इंदिरा गांधी) : प्रो० हुमायून कबिर की मृत्यु से सभा के सभी वर्गों को गहरा शोक हुआ है। हमारे बीच में से एक देशभक्त तथा जन-सेवक उठ गया है। जीवन के प्रारम्भ में उन्होंने विद्वत्ता तथा वाङ्मयता के लिये ख्याति प्राप्त की, वह एक कवि, उपन्यासकार तथा अध्यापक थे और उन्हें उनके छात्र श्रद्धा के साथ याद करते हैं। उन्हें मौलाना आजाद तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं के साथ निकट सम्पर्क में आकर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने पहले शिक्षा मंत्रालय के सलाहकार तथा सचिव के रूप में काम किया और बाद में इस मंत्रालय के मंत्री के रूप में। उन्होंने दो अन्य मंत्रालयों का भी पथ-प्रदर्शन किया। उन्होंने इतिहास, साहित्य तथा दर्शनशास्त्र की पुस्तकें लिखी हैं और उनके द्वारा खूब नाम कमाया। वह जिस काम में भी हाथ डालते थे उसे बड़े उत्साह, लगन एवं धैर्य से किया करते थे। टैगोर शताब्दी समारोह को जिस ढंग से उन्होंने आयोजित किया था वह उनकी शक्ति का एक प्रमाण है। इस सभा में साहस तथा विश्वास से वह अपने उद्देश्यों की पुष्टि किया करते थे ।

हमारे देश के एक विद्वान तथा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का निधन हुआ है। अध्यक्ष महोदय आपसे मेरा निवेदन है कि आप शोक-संतप्त परिवार को हमारा संवेदना-सन्देश पहुँचा दें ।

श्री रंगा (श्रीकाकुलम) : हमारे दिवंगत मित्र हुमायून कबिर के बहुमुखी व्यक्तित्व के बारे में, अध्यक्ष महोदय, आपने तथा प्रधान मंत्री ने जो कुछ कहा है, उसमें मैं भी सम्मिलित होता हूँ। जब हम सभी लोग अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ रहे थे, 'प्रोग्रेसिव राइटर्स' संस्था में उनके साथ काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह एक महान् इतिहासकार तथा विद्वान व्यक्ति थे और लोकतंत्र में उनका अटूट विश्वास था ।

वह एक सच्चे शिक्षाशास्त्री तथा उच्च कोटि के विद्वान थे। वह विश्वविद्यालय में अध्यापक भी रहे थे। उन्होंने अनेक भले काम किये हैं जिनमें उनका एक महत्वपूर्ण काम हैदराबाद में सालार जंग संग्रहालय का विकास करना था। उन्होंने इसे राष्ट्रीय संग्रहालय में परिवर्तित किया जो आज हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की एक अमूल्य निधि है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की शताब्दी समारोहों की सफलता के लिये उन्होंने जो काम किया है वह बहुत सराहनीय था और उससे उन्हें सदैव कीर्ति प्राप्त होती रहेगी।

मुझे उनके निधन पर भारी दुःख हुआ है क्योंकि उन्होंने अपने आप को एक बहुत उदार सहयोगी, एक बढ़िया मित्र तथा महान् विद्वान सिद्ध किया था। मैं शोक-संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ ।

Shri Balraj Madhok (South Delhi) : The sudden demise of Prof. Humayun Kabir has created a void in the political life of our country. Prof. Kabir epitomised an academician and a statesman which is a rare phenomenon in political life as also is the dire need of the hour. Most of the politicians become completely oblivious of their

intellectual pursuits which results in the drawback in both political as well as intellectual life. But the way in which he combined in him both these things is worth emulating.

He was a true democrat who always struggled hard for the cause of democracy. He is snatched away from our midst by the cruel hands of death at a time when the country needed his services most, particularly at this juncture when democracy is beset with so many dangers and threats. The best way to pay our homage to the departed soul would be to imbibe his qualities in our lives.

Sir, on my behalf and on behalf of my party, I request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री मनोहरन (मद्रास–उत्तर) : प्रो० हुमायून कबिर के आकस्मिक निधन पर सभा की नेता तथा अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं ने जो भाव व्यक्त किये हैं उनमें मैं अपनी तथा अपने दल डी० एम० के० की ओर से पूरी तरह शरीक हूँ । वह एक महान् लेखक, विद्वान तथा बहुत बड़े इतिहासकार थे और इससे भी अधिक वह इस देश के एक सच्चे सपूत तथा देशभक्त थे । उनकी मृत्यु से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती ।

अध्यक्ष महोदय, आपसे अनुरोध है कि आप हमारा संवेदना–सन्देश उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुँचा दें । ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे ।

श्री हो० ना० मुकर्जी (कलकत्ता–पूर्वोत्तर) : ऐसा विश्वास करना कठिन है कि प्रो० हुमायून कबिर, जिनके साथ मैंने परसों केन्द्रीय कक्ष में बातें की थी और हम एक साथ बैठे थे, अब हमारे बीच में नहीं रहे ।

प्रो० कबिर को मैं प्रारम्भ से ही जानता हूं, और हमारे राजनैतिक मतभेदों के बावजूद हमारी मित्रता अभिन्न तथा अटूट रही ।

प्रो० कबिर देश में बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे । उनका कलकत्ता तथा ऑक्सफोर्ड में विद्या सम्बन्धी जीवन बहुत उज्ज्वल रहा है, यद्यपि वह साहित्य से दर्शन की ओर झुक गये थे, किन्तु उन विषयों में उनकी विद्या सम्बन्धी प्रतिभा ज्यों की त्यों कायम रही ।

उनके शेष जीवन से हम सभी परिचित हैं । मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि उन्होंने रवीन्द्र नाथ टैगोर की शताब्दी के संबन्ध में जो कार्य किया था उसका प्रधान मंत्री तथा प्रो० रंगा ने उल्लेख किया है ।

उनके राजनैतिक जीवन के बारे में मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम सभी लोग उससे भली-भाँति परिचित हैं । किन्तु उनके निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी बहुत कठिन है ।

मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से उनके निधन पर संवेदनाएँ प्रकट करता हूं और चाहता हूँ कि आप हमारा संवेदना–सन्देश शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचा दें ।

Shri Rabi Ray (Puri) : It is a matter of deep sorrow that the claws of the cruel Death have snatched away Pro. Humayun Kabir from our midst. Personally I did not have any close contact with him. But three or four months back, I got an opportunity to attend a symposium with my hon. friend Shri Madhok where I met him. Although

we differed with him as regards the situation in West Bengal was concerned, I saw he was a highly talented person and he spoke with a deep sense of conviction. He was a distinguised writer and a nice historian.

On my own behalf and on behalf of my party I request you to convey our condolences to the bereaved family.

श्री उमानाथ (पुद्दूकोटै) : मै अपने दल की ओर से श्री हुमायून कबिर के निधन पर शोक व्यक्त करता हूँ । हम शोक-संतप्त परिवार को संवेदना–संदेश भेजने में हम शरीक हैं ।

श्री हेम ब आ (मंगलदायी) : मै अपने दल की ओर से, आप, प्रधान मंत्री तथा इस सभा में अन्य दलों के नेताओं द्वारा व्यक्त भावनाओं में शरीक हूँ ।

मैं प्रो० हुमांयून कबिर का कलकता विश्वविद्यालय में छात्र रह चुका हूँ और मुझे पता है कि वह कितने उच्च कोटि के अध्यापक थे ।

वह एक साहसी व्यक्ति थे । जब देश में दो राष्ट्रों के सिद्धान्त की चर्चा जोरों पर चल रही थी, प्रो० हुमांयून कबिर ने उसका खुले आम विरोध किया था । इसके अतिरिक्त वह प्रगतिवादी थे और उन्होंने स्वर्गीय नेहरू द्वारा देश में चलाये गये प्रगतिवादी आन्दोलन को बढ़ावा दिया था ।

वह एक प्रतिभाशाली लेखक थे और बंगला साहित्य में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

उनकी पत्नी भी क्रान्तिकारी आन्दोलन में कूद पड़ी थीं । उनके सारे परिवार ने इस आन्दोलन में भाग लिया था । जहाँ हम इन बातों को श्रद्धा से याद करते हैं, वहाँ हमें उनके निधन पर भारी दुःख भी है ।

मैं अपने दल की ओर से भारत के एक महान् दिवंगत सपूत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपसे निवेदन करता हूँ कि आप शोक-संतप्त परिवार को हमारा हार्दिक संवेदना-सन्देश पहुँचा दें ।

Shri Prakashvir Shastri (Hapur): The sad and sudden demise of Prof. Humayun Kabir, which comes as a great shock to the whole nation and his family, is an irreparable loss to the Bhartiya Kranti Dal. He was a member of the National Executive of the BKD and was guiding the activities of the Dal *ab initio* in West Bengal.

He was a democrat in true sense of the word and he gave new ideas to the country for preserving and giving new direction to democracy. During his last days he was distressed by the situation obtaining in West Bengal and was greatly pained to see the tense political situation at the Centre during the Presidential Elections.

In his death the country has lost a great champion of democracy causing an irreparable loss to both political as well as educational fields.

On my behalf and on behalf of my party, the BKD, I pay my homage and respect to the memory of the departed soul.

Shri Abdul Gani Dar (Gurgaon) : Mr. Speaker, Sir, on the demise of a true son of India, Prof. Humayun Kabir, I associate myself with the noble sentiments expressed by you, the Leader of the House and other leaders of various parties in the House.

He was a talented man and he added a new dimension to the glory of India by preaching Indology and Indian culture in every part of the world, of which we always feel proud.

He always believed in simplicity and lived austerily throughout his life irrespective of the high position he occupied at different stages in his distinguished career.

I once again pay my homage to the departed soul and request you to convey my sincere condolences to the bereaved family.

श्री नि० चं० चटर्जी (बर्दवान) : मैं अपनी तथा निर्दलीय संसदीय दल की ओर से प्रो० हुमांयून कबिर के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करता हूँ। उनकी मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति होना बहुत कठिन है। पश्चिम बंगाल का सदस्य होने के नाते मैं यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि इस भारी क्षति का उल्लेख शब्दों में नहीं किया जा सकता।

प्रो० कबिर केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्य भी रहे हैं। किन्तु उनकी एक भारी विशेषता यह थी कि जिस बात का वह अनुमोदन नहीं करते थे, उसके आगे वह कभी नहीं झुकते थे और जिस बात को वह ठीक समझते थे, केवल उसी बात का अनुमोदन एवं समर्थन करते थे।

उनका जन्म पूर्वी बंगाल में फरीदपुर में हुआ था। पूर्वी बंगाल ने उन्हें कई बार आमंत्रित किया था और कुछ लोगों ने उन्हें वहाँ जाने के लिये प्रोत्साहित भी किया किन्तु उन्होंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और कहा "नहीं, भारत मेरी मातृ-भूमि है। भारत मेरा घर है।" वह इस प्रकार के व्यक्ति थे और उनका जीवन भी ऐसा ही था।

सभा में मेरे मित्रों न उनके निधन पर जो दुःख भरे उद्‌गार व्यक्त किये हैं, मैं उनमें शरीक हूँ। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री० एम० मुहम्मद इस्माइल (मंजेरी): प्रो० हुमांयन कबिर वास्तव में बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में एक प्रभावशाली तथा प्रखर बुद्धि वाले लेखक, एक विख्यात वक्ता और प्रशासक के रूप में ख्याति प्राप्त की थी। उन्होंने हर काम निष्ठा के साथ किया। उनमें मानव के प्रति सहानुभूति कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह निर्धनों तथा दलित लोगों के मित्र थे। उनका निधन केवल उनके परिवार के लिये ही नहीं अपितु सारे देश के लिये एक क्षति है।

मैं अपनी तथा अपने दल, मुस्लिम लोग की ओर से दिवंगत नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और, अध्यक्ष महोदय, आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप हमारी संवेदनाएँ शोक-संतप्त परिवार तक पहुँचा दें।

अध्यक्ष महोदय: दिवगंत आत्मा के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिये सदस्यगण थोड़ी देर के लिये मौन खड़े होंगे।

(इसके पश्चात् सदस्य गण थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे।)

(The Members then stood in silence for a short while.)

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान प्रकट करने के नाते सभा कल ग्यारह बजे (म० पू०) तक के लिये स्थगित होती है।

इसके पश्चात् लोक सभा बुधवार, 20 अगस्त, 1969/29 श्रावण, 1891 (शक) के ग्यारह बजे (म० पू०) तक के लिये स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, August 20, 1969/Sravana 29, 1891 (Saka)

Printed by Job Printers, 119, Swami Vivekanand Marg, Allahabad—3.

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]